Self Respect

10-09-2014

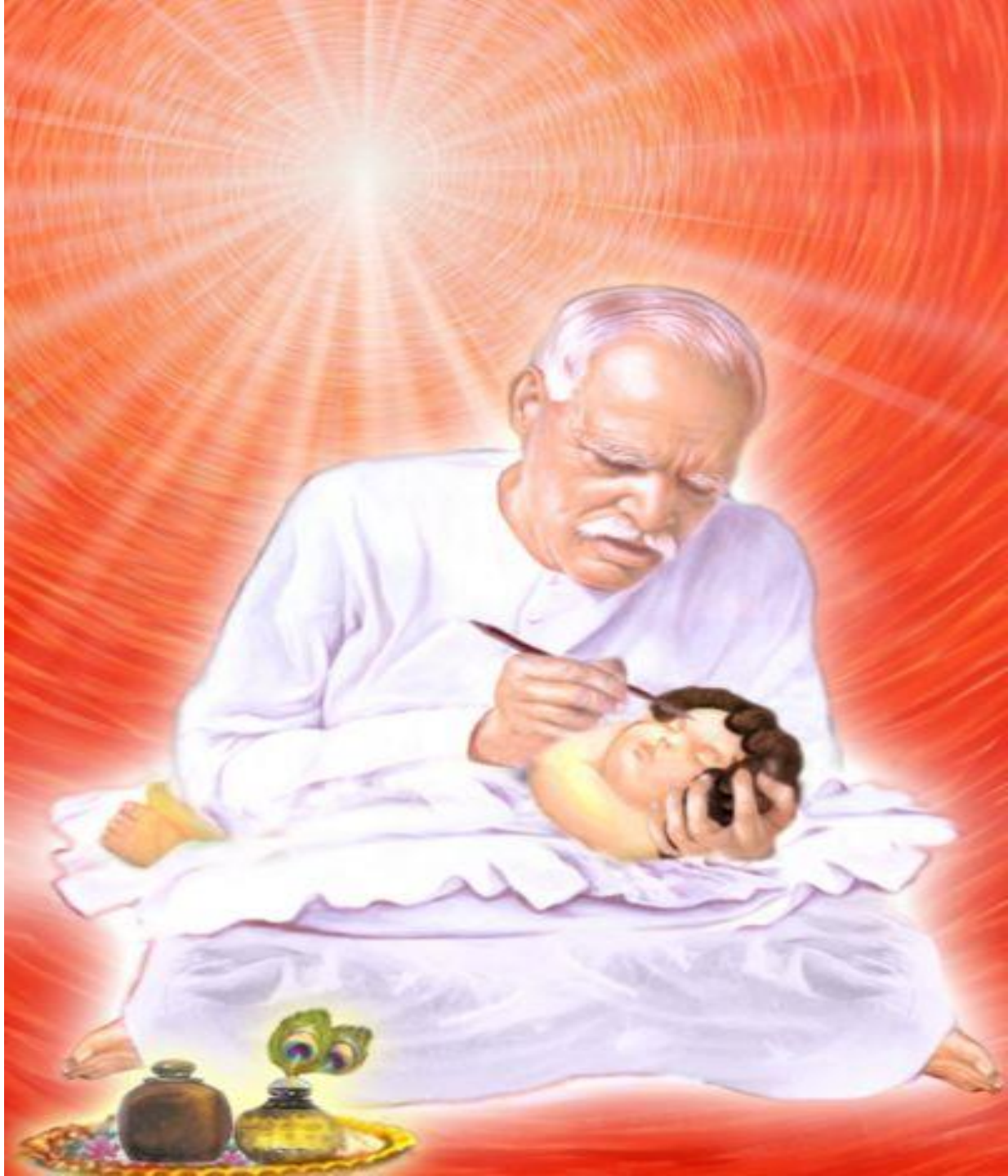

❖रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बेहद का बाप समझाते हैं-यहाँ तुम बाप के सामने बैठे हो । घर से निकलते ही इस विचार से हो कि हम जाते हैं शिवबाबा के पास, जो ब्रह्मा के रथ में आकर हमको स्वर्ग का वर्सा दे रहे हैं । हम स्वर्ग में थे फिर 84 का चक्र लगाकर अभी नर्क में आकर पड़े हैं । और कोई भी सतसंग में किसकी बुद्धि में यह बातें नहीं होंगी ।

❖तुम बच्चों को तो पक्का निश्चय है कि ईश्वर बाप सर्वव्यापी नहीं है । बाप सुप्रीम बाप है, सुप्रीम टीचर, गुरू भी है । बेहद का सद्गति दाता है । वही शान्ति देने वाला है । और कोई जगह ऐसे ख्याल कोई नहीं करता है कि क्या मिलना है । सिर्फ कनरस-रामायण, गीता आदि जाकर सुनते हैं । बुद्धि में अर्थ कुछ नहीं ।

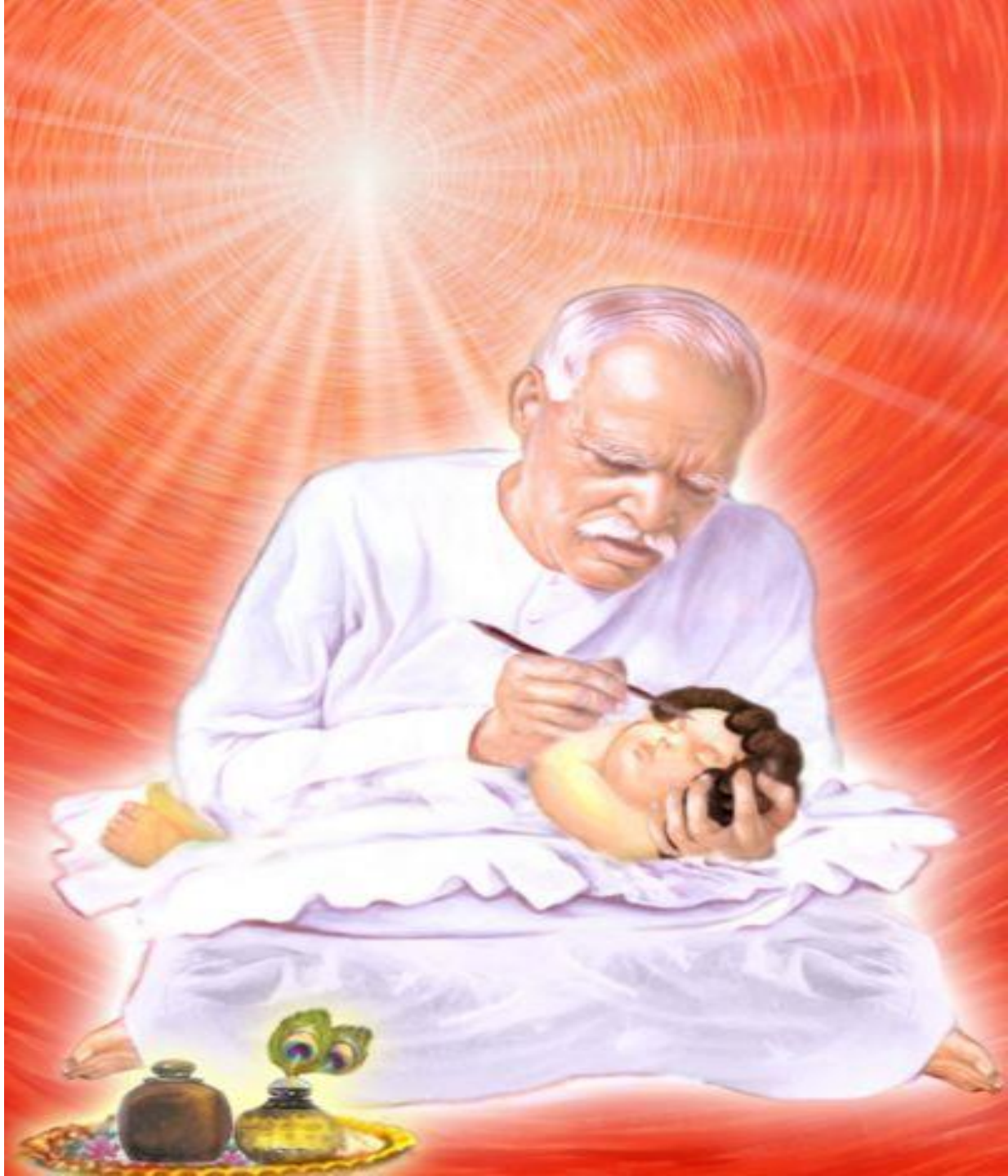

❖अभी तुम्हारी जो सर्विस चलती है, इतना खर्चा होता है, यह तो तुम बच्चे ही एक-दो को मदद करते हो । बाहर वालों को तो कुछ पता ही नहीं । तुम ही अपने तन-मन- धन से खर्चा कर अपने लिए राजधानी स्थापन करते हो । जो करेगा वह पायेगा । जो नहीं करते वह पाएंगे भी नहीं । कल्प-कल्प तुम ही करते हो । तुम ही निश्चय बुद्धि होते हो । तुम समझते हो कि बाप, बाप भी है, टीचर भी है, गीता का ज्ञान भी यथार्थ रीति सुनाते हैं ।

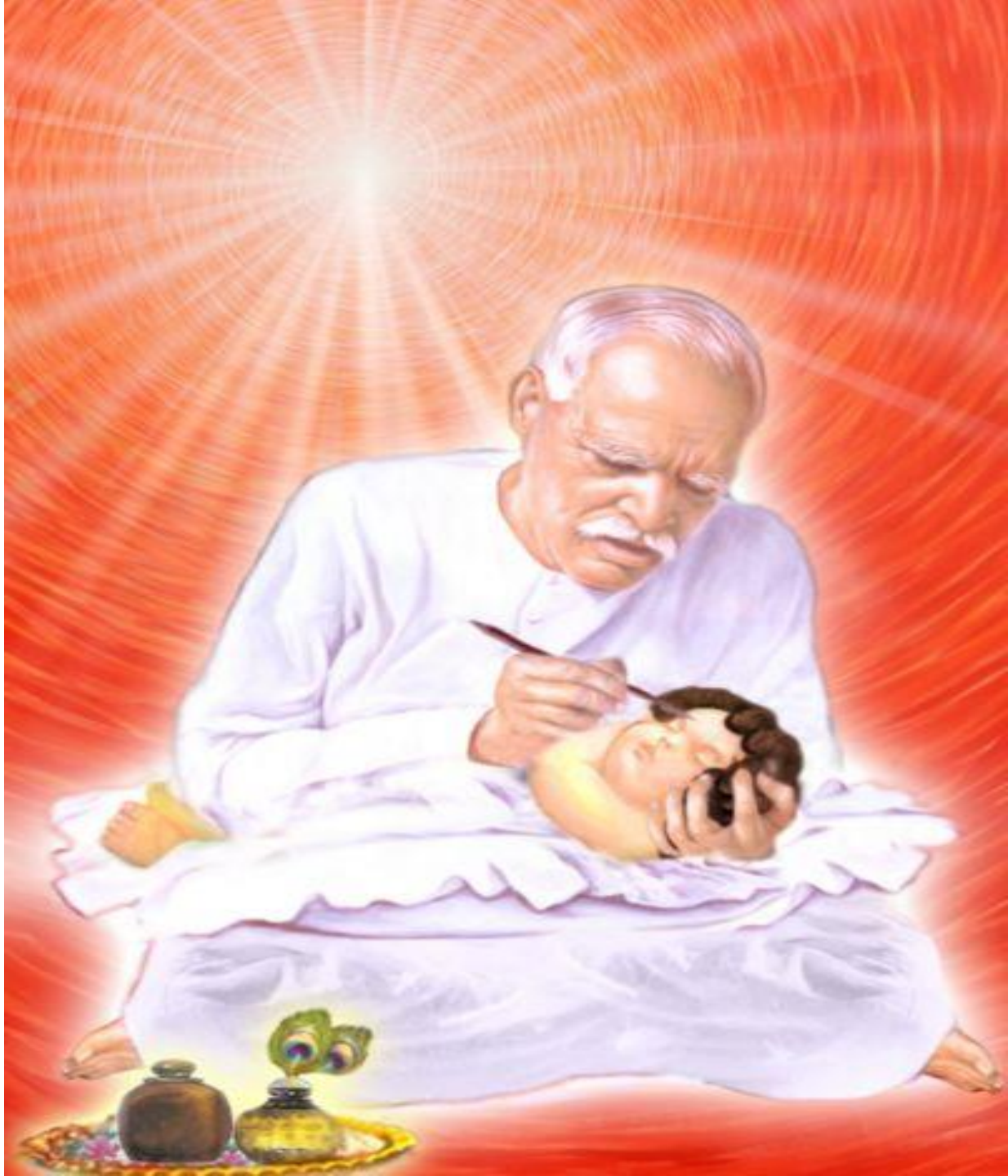

❖सब आत्माओं का बाप एक सुप्रीम बाबा है । उनसे जरूर सुप्रीम बेहद का पद भी मिलना चाहिए । सो 5 हजार वर्ष पहले तुमको मिला था । वो लोग कलियुग की आयु लाखों वर्ष कह देते हैं । तुम 5 हजार वर्ष कहते हो, कितना फर्क है ।

❖यह एम ऑब्जेक्ट सामने खड़ी है । इनके राज्य में विश्व में शान्ति थी । यह राजधानी हम फिर स्थापन कर रहे हैं ।

❖हम यह सुख-शान्ति का राज्य स्थापन कर रहे हैं, अपने ही तन-मन- धन से गुप्त रीति । बाप भी गुप्त है, नॉलेज भी गुप्त है, तुम्हारा पुरूषार्थ भी गुप्त है

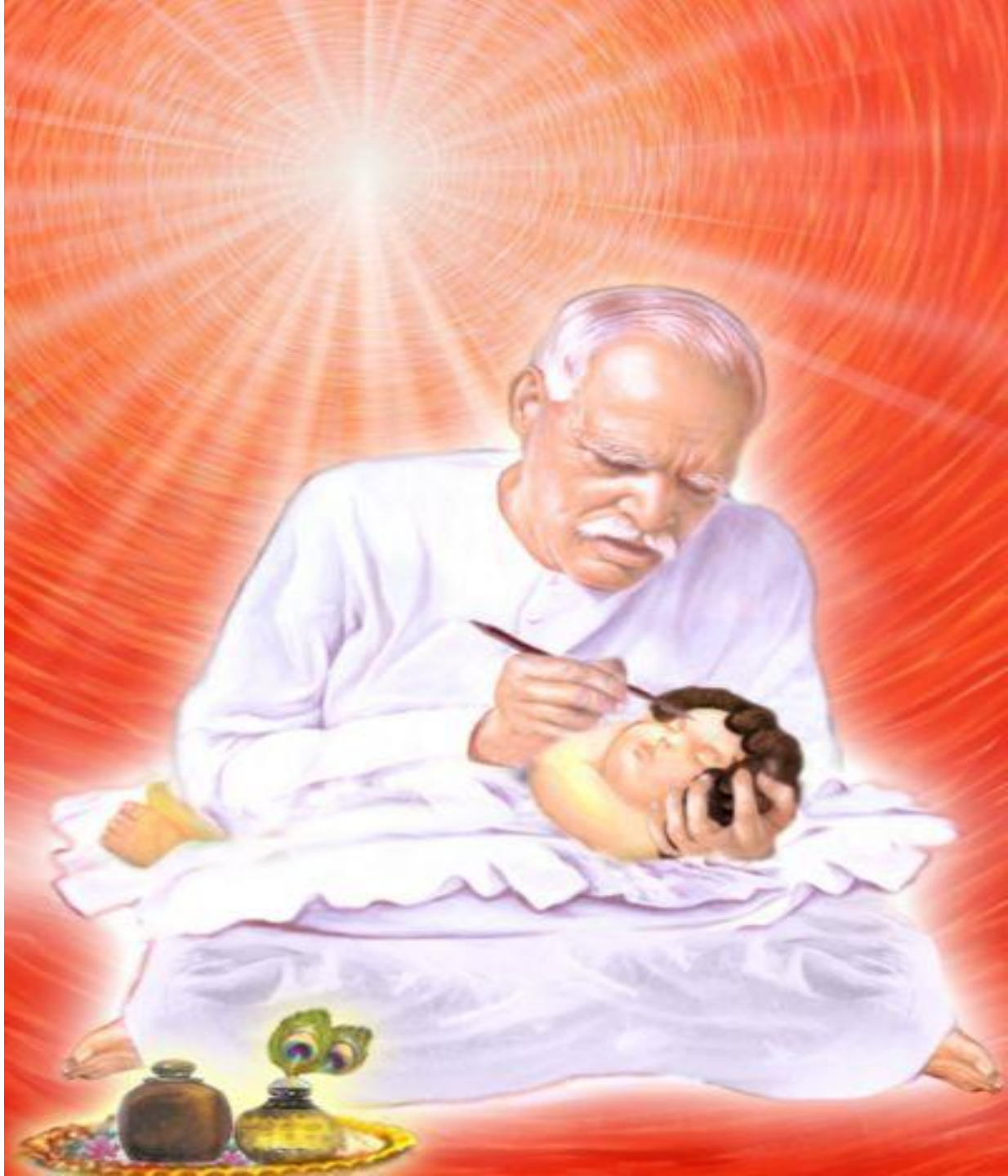

❖ बाबा के पास कोई भी आता है तो उससे पूछता हूँ- आगे कब मिले हो? कोई तो जो समझे हुए हैं वह झट कह देते हैं 5 हजार वर्ष पहले । कोई नये आते हैं तो मूँझ पड़ते हैं ।

❖ वह तो हठयोग से हद का सन्यास कर जंगल में जाकर बैठते हैं । तुम्हारा तो है सारी पुरानी दुनिया से वैराग्य, इसमें तो अथाह दु :ख हैं । नई सतयुगी दुनिया में अपार सुख हैं तो जरूर उनको याद करेंगे । यहाँ सब दु :ख देने वाले हैं । माँ-बाप आदि सब विकारों में फँसा देंगे ।

❖ सतयुग में अपार सुख था । अब मैं आया हूँ - अनेक अधर्म का विनाश और एक सत धर्म की स्थापना करने । तुमको राज्य- भाग्य देकर वानप्रस्थ में चले जाएंगे ।

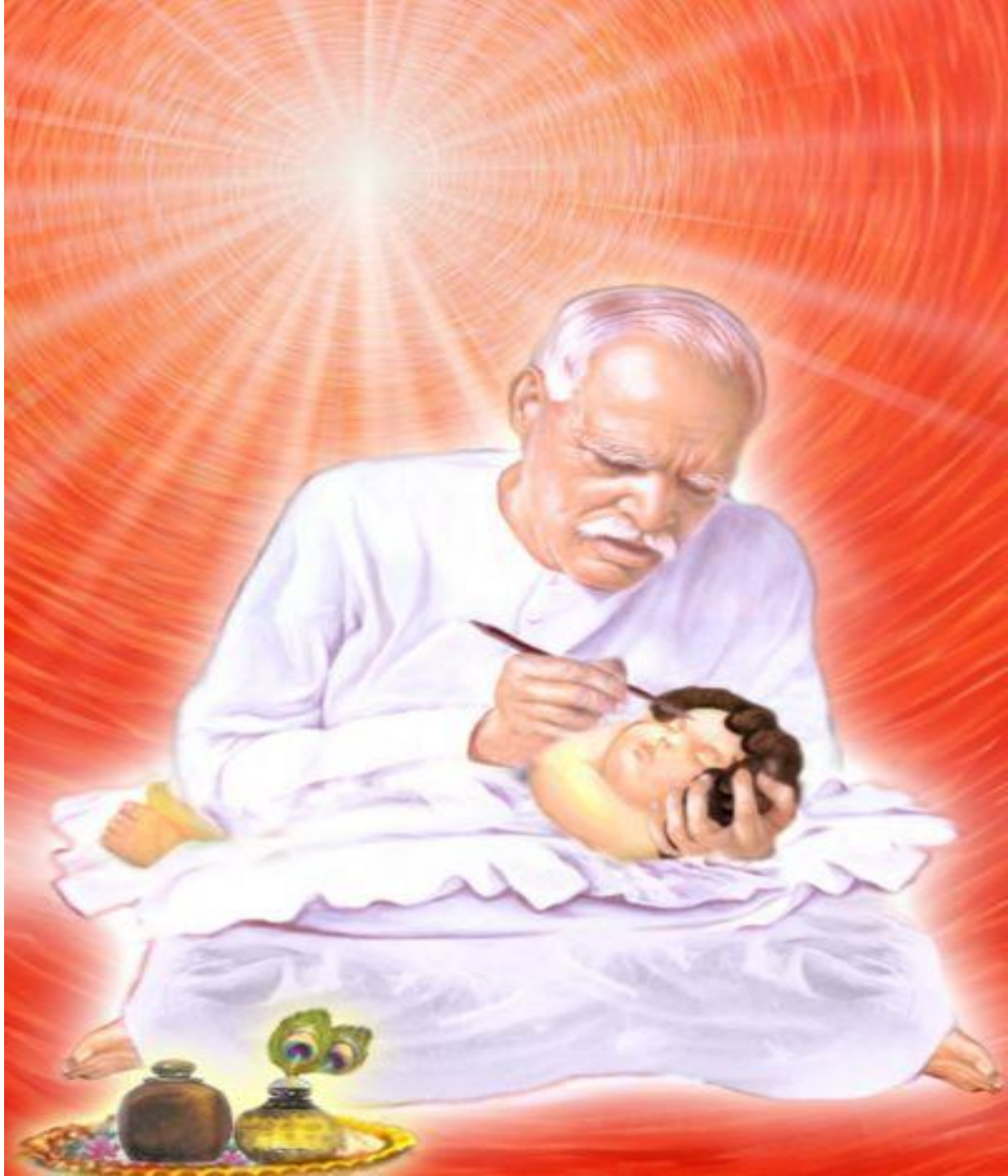

❖मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमोर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते ।

❖वरदान: मन-बुद्धि को झमेलों से किनारे कर मिलन मेला मनाने वाले झमेलामुक्त भव !

❖स्लोगन: इस बेहद नाटक में हीरो पार्ट बजाने वाले ही हीरो पार्टधारी हैं ।